22

गामा पहलवान

भारतवर्ष में विश्व-विजयी पहलवान गामा का नाम घर-घर में प्रसिद्ध था और अभी भी याद किया जाता है। गामा पहलवान पहले गया नगर में यहाँ के सुप्रसिद्ध गयावाल पंडा सिजवारजी के आश्रय में रहते थे। सिजवारजी के संरक्षण में ही वे इंग्लैंड जाकर उस समय के विश्वविजेता पहलवान सैंडो को पछाड़ सके थे। गया का गयावाल-समाज संगीत और अन्य प्रकार के सांस्कृतिक आयोजनों का बड़ा प्रेमी है। काशी के मौज-मस्तीभरे जीवन का थोड़ा-सा स्वरूप गया के गयावाल समाज में ही मिलता है। बिहार के सुप्रसिद्ध कवि श्री मोहनलाल महतो इसी समाज के थे। पितृपक्ष के पंद्रह दिनों को छोड़कर पूरे वर्ष भर गयावालों को कोई विशेष काम नहीं रहता है। उन्हें सुफल के रूप में पितृपक्ष में इतनी आय हो जाती है कि पूरे वर्ष भर मनोविनोद के कार्यों को छोड़कर और किसी बात की चिंता नहीं करनी होती है। गामा के संरक्षक सिजवारजी के वर्तमान उत्तराधिकारी गोपाल प्रसाद सिजवारजी भी स्वयं कवि और कहानी लेखक हैं और नगर के प्रमुख साहित्यिकों में उनकी गणना की जाती है।

गामा पहलवान से मेरी भेंट किस प्रकार हुई उसीकी झाँकी मैं यहाँ दे रहा हूँ। मेरी अवस्था 12-13 वर्ष की थी और मैं अपने चचेरे भाई बनारसीलालजी तथा अन्य मित्रों के साथ बिहार के हरिहर क्षेत्र में लगनेवाले वार्षिक मेले में गया था। यह मेला भारत का ही नहीं, एशिया का या शाायद विश्व का भी सब से बड़ा पशु-मेला है जिसमें हाथी, घोड़े, गाय, बैल, हरिन, सूअर आदि पशु और सभी प्रकार के पक्षी बेचे और खरीदे जाते हैं और लाखों व्यक्तियों की भीड़ होती है। इस मेले में लोग तंबुओं में ठहरते हैं। हम लोग भी एक बड़े तंबू में टिके हुए थे। हमें खरीद तो कुछ करनी नहीं थी, केवल मेले में घूम घूमकर उसका आनंद उठाना था। एक दिन मैं मेले में घूम रहा था कि मैंने देखा एक छोटी-सी भीड़ किसी अत्यंत मोटे तगड़े व्यक्ति के पीछे बढ़ी जा रही है। कुतूहलवश, मैं भी उसमें शामिल हो गया। जब मैं भीड़ के साथ आगे गया तो लोगों ने पूछने पर बताया कि ये गामा पहलवान हैं। उसके आगे कुछ और परिचय की

आवश्यकता नहीं थी। गामा पहलवान के पीछे-पीछे मैं भी हो लिया। व अपने तंबू के पास आकर ठहर गये। नौकरों ने दौड़कर उनके आगे कुर्सी रख दी जिस पर वे बैठ गये। भीड़ धीरे-धीरे छँट गयी। मैंने आगे बढ़कर पूछा, 'पहलवानजी, मैं गया से मेला देखने आया हूँ, आपके दर्शन से अपने को बहुत सौभाग्यशाली मानता हूँ। मुझे एक बात पूछनी है।' एक बालक के मुँह से इतनी प्रेमभरी बात सुनकर गामा पहलवान प्रसन्न हो गये। बोले, 'पूछो भाई, क्या जानना चाहते हो।' मैंने कहा, 'मैं गया का रहनेवाला हूँ। मैंने सुना है कि आपका प्रारंभिक जीवन गया में हमारे यहाँ के गयावाल पंडा सिजवारजी के संरक्षण में बीता है, क्या यह सच है।' गामा पहलवान भाव-विभोर हो गये। बोले 'बिल्कुल सच है। गामा सिजवारजी का बनाया हुआ है। यदि वे न होते और उनका संरक्षण मुझे न मिलता तो जो मैंने पाया है वह कभी नहीं पा सकता था। कुछ रुककर वे बोले- 'सिजवारजी ने जो मुझे दिया उसका बदला मैं कभी नहीं चुका सकता। उनके संरक्षण में ही विश्वविजय का सेहरा मेरे माथे पर बँधा था। वह मेरे जीवन का स्वर्णकाल था।' इस प्रकार मेरी विश्वविजयी गामा पहलवान की भेंट समाप्त हुई। हिंदुस्तान और पाकिस्तान बनने के बाद वे पाकिस्तान के नागरिक बन गये थे जहाँ उनकी वृद्धावस्था अच्छी नहीं बीती थी। उनके दैनंदिन भोजन की व्यवस्था भी बड़ी व्ययसाध्य थी जिसके समुचित प्रबंध करने की ओर संभवतः पाकिस्तान सरकार ने ध्यान नहीं दिया था क्योंकि पत्रों में उसका मार्मिक समाचार छपा था।

गामा पहलवान के नित्य के भोजन के विषय में बाद में वियोगीजी ने, जो गयावाल समाज में रहने के कारण और सिजवारजी के संबंधी होने के कारण पूरी बात से अवगत थे, मुझे जो बताया वह इस प्रकार है—

सुबह में पाँच-सात सौ दंड-बैठक करने और शागिर्दों को अपने साथ कुश्ती लड़ाने के बाद वे निम्नलिखित जलपान करते थे जो उनका प्रमुख भोजन था— एक पूरी खस्सी को मारकर घंटों पानी से भरे कड़ाह में खौलाया जाता था। जब वह पानी सेर दो सेर रह जाता था और वह खस्सी पूरी तरह उसमें जज्ब हो जाती थी तो वह पानी छान लिया जाता था। सेर भर बादाम का हलुआ जो घी के बदले बादाम के तेल में ही पकाया जाता था और वह कड़ाह का छना हुआ खस्सी का शोरबा, यही उनका सुबह का जलपान था। दोपहर में कुछ रोटियाँ और सब्जी आदि तथा रात में दूध और सामान्य भोजन, बस यही उनकी खुराक थी। इस तालिका से स्पष्ट हो जायगा कि इस प्रकार की खुराक बाद की मँहगाई के समय और बिना विशेष वित्तीय सहयोग के कोई कायम नहीं रख सकता था।